विभिन्न स्कूलों में पर्यावरण चेतना पर सामाजिक, आर्थिक स्थिति के प्रशासन का प्रभाव

(Effect of socio-Economic status on governance in Environmental consciousness in various schools)

अजय गौतम
शोधार्थी
आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद
E-mail – gautam.ajay454@gmail.com

डॉ0 प्रदीप कुमार तिवारी
सहायक प्राध्यापक
शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद
E-mail – Pradeep.tiwar115@gmail.com

अभिषेक यादव
शोधार्थी
शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यावरण के प्रति जागरूकता, संरक्षण के विषय में वर्णन किया है। पर्यावरण संकट से उवरने के लिए पर्यावरणीय जागरूकता की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है जिससे पर्यावरण को संतुलित स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाया जा सके। अतः विद्यालय परिवार के माध्यम से जनसाधारण को पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाए। पर्यावरण एक अत्यन्त व्यापक सम्प्रत्य है जिसकी रचना सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, राजनीतिक तथा प्रशासनिक घटको के समन्वय से होती है। क्योंकि यह घटक एक दूसरे को प्रभावित करते है। इस शोध पत्र में पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण जागरूकता, सामाजिक–पर्यावरणीय संघर्ष, आर्थिक विकास का पर्यावरण पर प्रभाव तथा पर्यावरणीय कानून व नियम का वर्णन किया है।

शब्दाबली (Key Words)-: *पर्यावरण संकट, पर्यावरण शिक्षा ,पर्यावरण जागरूकता, पर्यावरणीय कानून*

परिचय (Introduction)

भौगोलिक अध्ययन में पर्यावरण आधार पक्ष है, क्योंकि जब जगत का नियामक है। पर्यावरण वह पक्ष है जिसमे पृथ्वी और जीव जगत को गौरव प्रदान किया है। हमारे चारो ओर व्याप्त सन्साधन ही जैविक और अजैविक रूप से पर्यावरण की रचना करते है। मनुष्य भी जैविक घटक का अभिन्न एवं महत्वपूर्ण अंग हैं। पर्यावरण मानव जीवन की उत्पत्ति से ही उसके जीवन और क्रियाकलापों को प्रभावित करता आ रहा है। विकसित और विकासशील देशों द्वारा औद्योगिकरण और विकास की होड में अनावश्यक रूप से प्रकृति का दहन हो रहा है जिससे पर्यावरण असंतुलन और प्रदूषण जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही है। बढ़ती हुई जनसंख्या,संस्कृति एवं धन लालच के कारण मनुष्य ने इस पृथ्वी को भयानक स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है, जो जीवन जीने योग्य नही रही है।

विश्व मे पर्यावरण संकट से उबरने के लिए पर्यावरणीय जागरूकता की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है, जिससे पर्यावरण को संतुलित, स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाया जा सके। अतः विद्यालय, परिवार के माध्यम से

जनसाधारण को पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाए। पर्यावरणीय शिक्षा व्यक्ति की चेतना जाग्रत करने का सरल माध्यम है। अतः पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण सुधार के लिए पर्यावरण के संबंध में परिवार के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा है। पर्यावरण एक अत्यन्त व्यापक सम्प्रत्यय है, जिसकी रचना (जैविक व अजैविक घटक) सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पारिवारिक, राजनेतिक तथा प्रशांसनिक घटकों के समन्वय से होती है। ये सब घटक एक दूसरे को प्रभावित करते है। इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा में अनेक विषयों का समावेश है।

पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप (Nature of environmental education):- पर्यावरण शिक्षा के स्वरूप को निश्चित करते समय विद्यार्थियों के स्तर को भी सोचना होगा। क्या, प्राथमिक स्तर, उच्च प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर और विश्वविद्यालय स्तर सभी में एक ही प्रकार का स्वरूप निश्चित किया जा सकता है? जबकि विभिन्न स्तरो पर विद्यार्थियों मे ज्ञान, अपबोध, उपयोग और कौशल को सीखने का प्रतिशत निश्चित ही भिन्न–भिन्न होता है। इस प्रकार विचार विमर्श के बाद अधिकांश शिक्षाविदो का मत है कि–

1 प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण के माध्यम से ही विषयों का पढ़ाया जाये।

2 उच्च पाथमिक स्तर पर विषयो में विशिष्ट पाठ जोड दिये जाये जो पर्यावरण से सम्बन्धित हो।

3 माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण की प्रविष्टि इस प्रकार दी जाये की विद्यार्थी सामान्य ज्ञान प्राप्त करते समय पर्यावरण के पक्ष को ग्रहण कर सके।

4 विश्वविद्यालय स्तर पर पर्यावरण सम्बन्धित विशेष कोस ही प्रस्तावित कर दिये जाये जिनमे विद्यार्थी स्नातक, परास्नातक या और भी ऊँची स्तर की शिक्षा प्राप्त करे सके।

पर्यावरण शिक्षा (environmental education): पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव अपनो संस्कृति एवं जैव भौतिक परिवेश के बीच पारस्परिक संबंधों की समझ ले प्रशसा का विकास तथा सम्प्रत्ययों की कुशलताओं और अभिवृत्तियों का विकास करता है। यह शिक्षा व्यक्ति की निर्णय प्रक्रिया एवं व्यवहार सहिता में भी आपेक्षित परिवर्तन लाती है।

अतः यह दृष्टिगत होता है कि पर्यावरण मानव जीवन के सभी पहलूओं को प्रभावित करता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्ता ने विभिन्न स्कूलों में पर्यावरण चेतना पर सामाजिक, आर्थिक स्थिति का प्रभाव का अध्ययन करने का निश्चिय किया। सर्वप्रथम बालक पर्यावरण के प्रति सीख परिवार से प्राप्त करता है। अतः पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक वातावरण बालकों को पर्यावरण के प्रति कितना जागरूक एव सचेत करता है इसी का अध्ययन इस शोधपत्र में किया है।

अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पारिवारिक वातावरण भी काफो सीमा तक बालकों की पर्यावरण शिक्षा मानवता एवं कर्तव्यों का बोध कराने वाल अधिगम का वह स्त्रोत है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक रहकर इसके संरक्षण की दिशा में कार्यरत रहता है।

अधिकांशतः देखा गया कि बालक तथा बालिकाओं में उनकी किसी भी विषय पर अभिवृत्ति का विकास करने के लिए उनके पारिवारिक वातावरण का महत्वपूण स्थान होता है, क्योंकि वह सभी अपना अधिक से अधिक समय अपने परिवार के साथ व्यतीत करते है। यदि अभिभावक पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते है तो निश्चिय ही उनके बच्चे भी पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखेगे।

पर्यावरण जागरूकता (Environmental awareness):- पर्यावरण शिक्षा द्वारा पर्यावरण जागरूकता विकसित होती है। कभी–कभो पर्यावरण जागरूकता व पर्यावरण शिक्षा को एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग में लाया जाता है,

किन्तु दोनों के अर्थो में पर्याप्त भिन्नता है। पर्यावरण अध्ययन के लिए जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, भूगोल एवं कृषि विज्ञान विषयों का अध्ययन किया जाना चाहिए। य सभी विषय पर्यावरण जागरूकता विकसित करने मे सहायक है। चूंकि किसी भी विषय के प्रति जागरूकता एवं अपना महत्व होता है। क्योकि मनुष्य किसी भी विशय के प्रति जागरूक है तो वह अपने विषय स सम्बन्धित समस्याओं से अवगत होकर उनका समाधान ढूंढने और भविष्य में उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों की रोकथाम के लिए आव" यक जानकारी प्राप्त करता है तथा उस समस्या का सदैव सकारात्मक समाधान करने का प्रयत्न करता है। इसलिए, यदि पूरा समाज पर्यावरण के प्रति जागरूक हा जायेगा तो इस समस्या का समाधान स्वतः हो जायेगा। इस कड़ी को पूरा करने के लिए परिवार को अपनी महात्वपूर्ण भूमिका अदा करनी होगी। क्योंकि यदि पारिवारिक वातावरण पर्यावरण के प्रति जागरूक हो जायेगा तो उस परिवार का हर बालक व बालिका अवश्य ही पर्यावरण के प्रति जागरूक हो जायेगा।

पर्यावरण संरक्षण के लिए यह आवश्यक है कि प्रशासन को समय–समय पर पर्यावरण जागरूकता के संबंध सूचनाएं प्राप्त करनी चाहिए और जिन देशो में पर्यावरण जागरूकता क प्रति लोगों का नाकारात्मक दृष्टिकोण है तो पर्यावरण के प्रति उन्हे सचेत करने का प्रयास करना चाहिए। पर्यावरणीय प्रशासन को पर्यावरण संरक्षण के लिए विभिन्न मुद्दों पर बल देना चाहिए।

जैसे– मृदा अपरदन, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, पानी, ओजोन परत, परमाणु जोखिम, ट्रांसजेनिक जीव। इन सभी मुद्दों पर विवाद समाने आ रहे है।

सामाजिक पर्यावरणीय संघर्ष (Social Environmental conflict):- 21 वीं सदी में भविष्य में पानी की कमी, वनो की कटाई और मिट्टी के कटाव, वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव जैसे– पर्यावरणीय गिरावट के प्रभाव के कारण शरणार्थीयों, युद्धों और शासनों के बड़ें पमाने पर माइग्रेसन में वृद्धि भविष्य में देखी जा रही है। लम्बे समय तक सामाजिक चुनौतियों ने सामाजिक कारणों पर ध्यान केन्द्रित किया है क्योंकि इसका कारण सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन है। अधिकतर सुरक्षा के प्रभावों को समझने और ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक संरचना दुनिया भर में पर्यावरणीय तनाव को लायेगा।

आज के परिवेश में विद्यालय व परिवार का कर्तव्य बनता है कि पहले वे स्वयं पयावरण के प्रति जागरूक हो तथा देश के भावी नागरिकों को पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के लिए प्रेरित करे।

पर्यावरण का अध्ययन प्राचीन और मध्यकाल में अध्ययन का गौण पक्ष रहा है। मनुष्य को सर्वशक्तिमान वनने की मानसिकता से उत्पन्न असन्तुलित मानव प्राकृति अर्न्तप्रक्रिया पर्यावरण के अवयन का कारण बनी और पारिस्थितिकी की धरती गुणवत्ता से विविध प्रकार के पर्यावरणीय सकंट उत्पन्न हो रहे है। इन सकंटों के निवारण के लिए पर्यावरण अध्ययन की आव" यकता है। पर्यावरण अध्ययन का व्यावसयिक पक्ष औद्योगिक देशों की आवश्यकता से उपजा है। अधिकाधिक संसाधन दोहन, अधिक ऊर्जा उपयोग, कृत्रिम रसायनों और नवीनतम तकनीको के उपयोग से अधिक लाभ के लिए नये उत्पादन और अपशिष्टों का निश्पादन ऐसे पक्ष है जिनके चलते पर्यावरण अध्ययन अधिक आवश्यक हो जाता है।

स्वस्थ जीवन के लिए स्वस्थ वातावरण का होना आवश्यक है परन्तु आज हम प्रकृति के साथ मजाक कर रहे हैं जिस कारण एक न एक दिन प्रकृति हम से सुखा, बाढ़, भूकम्प व अन्य रूपों में बदला अवश्य लेगी । हमे स्वस्थ रहने के लिए पर्यावरण के पति सकारात्मक दृष्टि कोण रखना होगा।

इस क्षेत्र मे छात्र–छात्राओं को पारिवारिक, सामाजिक वातावरण अपनी भूमिका उन्हें उचित मार्गदर्शन देकर उन्हें निभा सकते है। इसके लिए पहले स्वयं उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक होना पडेगा । तथा अपने बच्चों को पर्यावरण की महत्वता से अवगत कराना होगा। जिससे उनके आने वाला कल अपने आप सुरक्षित हो जायेगा।

पर्यावरण चेतना पर आर्थिक विकास का प्रभाव (Effect of economic development on environmental consciousness):- आर्थिक विकास जिसका लक्ष्य बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं ओर सेवाओं को बढाया हैं पर्यावरण पर इसका दबाव अधिक पड़ता है। क्योंकि मानव ने आर्थिक विकास ओर आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण को दोहन अवौद्विक और असंवेदनशील तरीके से किया है। मनुष्य के स्वार्थ की पूर्ति और लालच के कारण पर्यावरण का विनाश किया है। विकास की प्रारम्भिक आवस्थाओं में पर्यावरण संसाधनों की बढती मांग पूर्ति से कम थी। अब विश्व के समक्ष पर्यावरण संसाधनों की बढ़ती मांग है, लेकिन उनकी पूति अत्यधिक सीमित है। मानव की आवश्यकताएं पर्यावरण से जरूर पूरी होने वाली है किन्तु इन आवश्यकताओं को पूरा करते समय हमें यह समझना होगा कि हम पर्यावरण के अभिन्न भाग है तथा हमारा विकास उसके साथ ही सम्भव है धारणोय विकास का लक्ष्य उस प्रकार के विकास का संवर्धन है जो कि पर्यावरण की समस्याओं को कम करे क्योंकि पर्यावरण को असंतुलित और दुशित कर हम स्वयं का जीवन तो सकट में डाल रहे हैं आने वाली पीड़ियों के साथ भी घोर अन्याय कर रहे है।

पर्यावरणीय प्रशासन ने पर्यावरणीय कानून व नियम निम्नलिखिल है।

1 जल प्रदूषण सम्बन्धी कानून
2 रोवर बोडर्स एक्ट 1956
3 जल (प्रदूषण निर्वारण एवं नियंत्रण) अधिनियम 1974
4 जल उपकर (प्रदूषण निर्वारण एवं नियंत्रण) अधिनियम 1977
5 पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986
6 भूमि प्रदूषण संबन्धी कानून
7 फैक्ट्रीज एक्ट 1948
8 इण्डस्ट्रीज (डेवलपमेन्ट एन्ड रेगुलेशन) अधिनियम 1951
9 इनसेक्टीसाइडस एक्ट 1968
10 अर्बन लैन्ड (सीलिग एण्ड रेगुलेशन) एक्ट 1976
11 वन तथा वन्यजीव संबन्धी कानून
12 फोरेस्टस (कनजरवेशन) एक्ट 1960
13 वाइल्ड लाईफ प्रोटेक्शन एक्ट 1972
14 फोरेस्ट (कनजरवेशसन) एक्ट 1980
15 वाइल्ड लाईफ (प्रोटेक्शन) एक्ट 1995
16 जैव विविधता अधिनियम 2002

भारत मे पर्यावरण संबन्धित उपरोक्त कानूनों का निर्माण उस समय किया गया था जब पर्यावरण प्रदूषण देश में इतना व्यापक नही था। अतः इनमें से अधिकांश कानून अपनी उपयोगिता खो चुके है। परन्तु अभी भी कुछ कानून व नियम पर्यावरण संरक्षण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रह है।

निष्कर्ष (Conclusion)

किसी विद्वान ने सत्य कहा कि पर्यावरण को यथावत छोड़ दिया जाये तो वह निरंतर लाखों सालों तक जीवन का सहारा बन सकता है। इस योजना में एस मात्र सवाधिक अस्थिर और संभावित विनाशकारी शक्ति मानव प्रजाति है। मानव आधुनिक प्रोद्योगिको की सहायता से पर्यावरण में जाने अनजाने दूरगामी और अपरिवर्तनीय बदलाव लाने की क्षमता रखता है। इसलिए हम सबको और हम सब में आज जागरूकता बहुत आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

- Samir Amin Capitalism in the Age of Globalization: The Management of Contemporary Society London, Zed Books, 1997
- Richard Barnet and John Cavanagh Global Dreams: Imperial Corporations and the New World Order New York, Simon & Schuster, 1994
- Zygmunt Bauman Globalization: The Human Consequences Cambridge, Polity Press, 1998
- Gagnon, V.P. “Ethnic Nationalism and International Conflict: The Case of Serbia.” International Security. Vol. 19, no. 3, 1994–95, pp. 130–166.
- Gamsakhurdia, Zviad. Tserilebi, Esseebi. Tbilisi: Khelovneba, 1991.
- Garaikoetxea, Carlos. Euskadi: La Transición Inacabada. Barcelona: Editorial Planeta, 2002.